Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 9, Issue - 3, March - 2026

ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 9.134

शिक्षण संशोधन

DOIs:10.2018/SS/202603008 --:-- Research Paper / Article / Review

गिरिजाकुमार माथुर विरचित 'छाया मत छूना' कविता की समीक्षा

जयन्त कुमार बोरो

साहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, कोकराझार विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम ।

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मणिपुर अन्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर ।

Email- jayantkok@gmail.com

सारांशः 'छाया मत छूना' अतीत की स्मृतियों को छोड़ वर्तमान में जीने की प्रेरणा देने वाली कविता है । इसमें कवि ने जीवन को नवीन और उर्जावान बनाने की प्रेरणा दिया है । जीवन की वास्तविकता को छोड़ अतीत में भटकने से दुःख के सिवाय कुछ प्राप्त नहीं होता । जीवन का कठोर सत्य यही है कि वर्तमान ही सब कुछ है । वर्तमान चाहे कितना ही संघर्ष पूर्ण, कठोर, वेदना से युक्त हो उसे सहज भाव से स्वीकार कर लेना चाहिए । इस कविता में कवि की दार्शनिकता और आध्यात्मिकता का भाव झलकता है । अतीत की स्मृतियाँ सदैव कष्टदायी होती है क्योंकि उसके दिन कितने ही सुखपूर्ण क्यों ही न रहे हो, वर्तमान में उसका कोई महत्व नहीं रह जाता । उसे वर्तमान में याद करना अर्थपूर्ण नहीं है । कवि यह स्पष्ट करते है कि तुम स्वयं को प्रभुत्व सम्पन्न क्यों न समझ लो, वह एक प्रकार की मृगतृष्णा है । रेगिस्तान में मृग पानी प्यास के मारे इधर-उधर भटकता फिरता है फिर भी उसे जल की प्राप्ति नहीं होती है । उसकी प्यास ज्यों की त्यों बनी रहती है । इस जगत में लालसा से आसक्त मनुष्य सदैव दौड़ लगा रहा है । एक दूसरे की प्रतिस्पर्धा लगा रखा है । पर क्या यही वास्तविक आनन्द है ? वास्तविक आनन्द के लिए मृगतृष्णा को त्याग कर वर्तमान भावजगत में विचरण करना होगा । अतः प्रत्येक प्रकाश के पीछे अंधकार छिपा है या यूँ कहें कि प्रत्येक अंधकार के पीछे प्रकाश विद्यमान है ।

बीज शब्द : वर्तमान, उर्जावान, प्रेरणा, आध्यात्मिकता, स्मृति, मृगतृष्णा, प्रतिस्पर्धा, आनन्द इत्यादि ।

1. परिचय :

गिरिजाकुमार माथुर एक ततस्थ और जगरूक कवि है । प्रथम तारसप्तक (1943 ई.) के कवियों में इनका नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है । उनकी कविता सहज, निष्ठा और रोमांटिक चेतना के साथ-साथ यथार्थ और गहन मानवीय अनुभूति पर आधारित है । उनके काव्य में रोमांच, प्रेम, सामाजिक दायित्व, नये प्रयोग और सूक्ष्मता माध्यम से नयी कविता तक की यात्रा की है । उन्होंने सन् 1934-35 ई. से काव्य सृजन का प्रारम्भ किया है । उनके कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुई है जैसे- 'मंजीर' (1941), 'नाश और निर्माण' (1946 ई.), 'धूप के धान' (1954 ई.), 'शिलापंख चमकीले' (1961 ई.), 'जो बँध नहीं सका' (1968 ई.), 'भीतरी नदी की यात्रा' (1975 ई.), 'कल्पनान्तर' (1983 ई.) आदि।

अनकी कविताओं में प्रेम, सौंदर्य और अति मानवीयता का स्वर मुखरित हुई है । उनकी कविताओं का विषय गहन अनुभूतियों पर आधारित है । 'भीतरी नदी की यात्रा' काव्य संग्रह में इसी आन्तरिकता का पता चलाता है । उन्होंने

स्वयं उक्त संग्रह की भूमिका में स्पष्ट किया है कि- "यह भूमि ममता, मोह, मानवीय संवेदना मर्मशीलता से जुड़ी हुई है । जीवन के भरपूर स्वाद जीने की आकांक्षा है किसी प्रकार का पलायन नहीं ।"[1]

2. साहित्य समीक्षा :

आलेख के लेखन हेतु तारसप्तक के द्वितीय संस्करण एवं विविध प्रकार के प्रकाशित ग्रंथों का सम्यक् किया गया है जिनका उल्लेख संदर्भ सूची एवं सहायक ग्रंथ सूची रूप में किया गया है ।

3. उद्देश्य :

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य मानव मन को अतीत के दुःखों से निकलकर वर्तमान में जीवन को जीने पर बल दिया गया है । कवि ने मनुष्यों को अतीत के दुःखों को छोड़ वर्तमान में जीवन को सतर्कता के साथ स्वीकार करने की प्रेरणा दी है । वर्तमान चाहे कितना ही पीड़ादायक क्यों न हो वहीं शाश्वत है । जीवन अतीत की ओर पलायन का नाम नहीं है । अतः जीवन को नदी के जल के भाँति प्रवाहित करते रहने चाहिए ।

4. शोध प्रविध :

विषय का अध्ययन एवं आलेख के लेखन के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है ।

विषय प्रतिपादन : गिरिजाकुमार माथुर की कविता 'छाया मत छूना' :

मनुष्यों के दुःखो का कारण उसकी लालसा और अतीत की स्मृतियाँ है । अतीत के भाव, विचार कल्पना उस गहन दुःखों में धकेल देती है । एक प्रकार से यह कविता मनोवैज्ञानिक तत्वों के आधार पर व्यक्ति मन की जाँच परताल करती है । प्रायः बुद्ध पुरूष हो या सनातनी परम्परा के ऋषि मुणियों ने अतीत की व्याख्या दुःख के साथ ही किया है । अतीत की स्मृतियाँ चाहे कितनी ही सुखद क्यों न हो अतीत तो अतीत है । उसे वर्तमान में उसी रूप में पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता । यदि नहीं किया जा सकता तो फिर उसके बारे में निरन्तर सोच विचार करना व्यर्थ है । सम्पूर्ण कविता की पंतियों में बौद्ध दर्शन की विचारधारा परिलक्षित होती है । मुनुष्यों की इच्छाएँ अनंत है वहीं उसके दुःखों का कारण है । जीवन में जो भी मिलता है वे सारे मृगतृष्णा की भाँति है जो भी मिलने का भाव उत्प्नन्न करता है अन्त में फिर लुप्प्त हो जाता है । सृष्टि में कोई भी वस्तु चिरस्थायी नहीं है । प्रत्येक वस्तु क्षण भंगुर है और अत्प काल के लिए ही आता है । कवि कहते है कि –

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना ।
जीवन में है. सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी
तन-सुंगध शेष रही, बीत गई यामिनी
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी। ।
भूली- सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण -
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना । [2]

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 9, Issue - 3, March - 2026
ISSN(o): 2581-6241
Impact Factor: 9.134

यथार्थ में अतीत के पल सुखदायी होते हुए भी वर्तमान के लिए दुखद का क्षण होता है । बीते हुए पल पीड़ा को तीव्र करती है । समय का ठहराव नहीं है । वह सदा प्रवाहमान है जो भी हमारे पास है वह सारे पल भर के बाद अतीत हो जाएगा । इसीलिए पीछे के सुखद पलो को वर्तमान के साथ जोड़ कर नहीं देखना चाहिए । वर्तमान में अतीत के सुख भी सुख नहीं पहुँचाता है । वे मात्र मन की सांत्वना मात्र बन कर रह जाती है । प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ न कुछ सुखद अनुभवों को लाता है जिसे सहारा बनाकर अपने बाकी के जीवन को बीताना चाहता है । कवि ने इस कविता के माध्यम से लोगो को सचेत करने का प्रयास किया है । हर सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख का आना जीवन की स्वाभाविक क्रिया है । अर्थात् ये दोने एक ही सिक्के के दो पहलू है । उनका मानना है कि प्रत्येक चाँदनी रातों के पीछे एक काली अँधेरी रात है । कवि ने उक्त कविता में अभिव्यक्त किया है कि उन्होंने अपनी प्रेमिका के साथ तारो भरी चाँदनी रात में दिन बिताए है, परन्तु वे बाते अब बीत चुकी है । यदि वर्तमान की सुध ली जाए तो केवल प्रिया के सुन्दर केशों में गुँथें महकते फूल की कल्पना मात्र रह गयी है । कवि के पास वियोग की दशा में प्रिय के साथ व्यतीत किए हुये मन भावन दृश्य के अलावा कुछ शेष नहीं रह गया है । कल्पना मात्र हृदय में बस कर रह गई है । मन में बसी अतीत के सुगंध को कुरेदने से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा । कवि ने अतीत की छाया को निषेध करने पर बल दिया है क्योंकि वे अतीत के सुखे घावों को वर्तमान में हरा भरा करता है ।

आलोच्य कविता में यश, मान , वैभव, धन-सम्पत्ति की लालसा को भ्रम माना गया है । मनुष्य अतीत हो या वर्तमान सभी कालों में उपर्युक्त वस्तुओं के प्रति आकृष्ट रहा है । किसी को पद की आकांक्षा है तो किसी को धन, मोक्ष, स्वर्ग इत्यादि । कवि ने कामना से पूरित मन को मृग-तृष्णा कहा है । मृगतृष्णा अर्थात् रेगिस्तान में जिस प्रकार पानी का प्यास के कारण हिरण इधर-उधर भटकता है पर उसे कुछ भी नहीं मिलता । उसे दूर पर सूर्य की तेज रोशनी से जल का आभास होता है किन्तु पास जाकर देखने पर ठगा सा रह जाता है । कवि ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य सांसारिक सुखों क प्रति आशक्त होकर निरन्तर दौड़ते चला जा रहा है । धन, एश्वर्य, नाम, यश मान आदि के पीछे भाग तो रहा है परन्तु वह जान नहीं पाता कि ये सारे के सारे उसके आगे-आगे भागे जा रहा है । इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है । उसका बीज एक बार लग जाने के बाद निरन्तर फैलता ही जाता है । यूँ कहे कि कामना से भरा जीवन लक्ष्यहीन होता है ।

कवि स्पष्ट करता है कि सांसारिक सुख भोगो के पीछे भागने से अच्छा है कि वर्तमान को सहर्ष स्वीकार कर लिया जाए । यही उक्ति जीवन में हीत साधक है । प्रत्येक उजली चाँदनी रात के बाद अमावश्या की काली रात छिपी होती है । सख-दुख की क्रम वृताकार रूप में चलते रहता है । इस जगत में कोई भी वस्तु चिर स्थायी नहीं है यह जल की भाँति हमेशा बहती जा रही है । जीवन की कठोर वास्तविकता ही सच्चे जीवन की पहचान है । अतीत की सुखद स्मृतियाँ वर्तमान में स्मरण करना मुर्खता सिद्ध करता है । कवि ने इसी धारण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि-

यश है या न वैभव, मान है न सरमाया ;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया ।
प्रभुता का शरण-बि.
म्ब केवल मृगतृष्णा है,
हर चन्द्रिका के छिपी एक रात कृष्णा है ।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना ।

मन, होगा दुख दूना ।[3]

प्रस्तुत कविता में कवि की दार्शनिक भावना अभिव्यक्त हुई है । जीवन में जो भी वस्तुएँ व्याप्त है वह सारे स्वयं की ही निर्मिति है । मनुष्य उन सारे चीजों का निर्माण स्वयं ही कर लेता जिनका उपयोग वह जीवन भर करता है । आवश्यकता ही आविष्कार का रूप धारण कर लेता है । पर यह जरूरी नहीं है कि इच्छित वस्तु पाने के बाद सुख मिल ही जाए । प्रायः ऐसा होता है जिसकी चाह मनुष्यों को होती है वह मिल जाने के बाद भी वह सुखी नहीं हो पाता । अंत में कामना पुरी होने पर भी दुःख छाया रहता है । जब दुःखों की प्राप्ति होती है तो मनुष्य यहीं सोचने लगता है कि व्यर्थ ही समय गवा दिया । ऐसी स्थिति में उसका तन सुखी होता है मन नहीं । असल में वहीं सुख वास्तविक है जिसे मिलने के बाद तन और मन एक साथ सदैव सुखी रहे । कवि की यह धारणा बौद्ध दर्शन से प्रभावित हुई है । कवि ने इसी भावना को निम्म पंक्तियों के माध्यम स स्पष्ट करने का प्रयास किया है -

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं ।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर ?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना ।
मन, होगा दुख दूना ।[4]

कवि ने उपर्युक्त पंक्तियों में यह वर्णित किया है कि मनुष्य जीवन भर अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए इधर-उधर घुमता-फिरता है । जीवन में कभी इच्छित वस्तुएँ मिलती भी है और नहीं भी । उसकी इच्छाओं से संबंधित जो भी उसे मिल जाता है तो कभी उसका तन सुखी होता है और कभी मन सुख होता है । सुख से प्रसंग में दोनों तन और मन सामंजस्य नहीं रहता । कोई भी सांसारिक वस्तुएँ तन और मन को संतुष्ट नहीं कर सकता । मानव मन के दुःखो की सीमाएं अनंत है । कोई एक वस्तु मिल जाने बाद तुंरत ही दूसरे वस्तु के प्रति लालसा जगती है, फिर दूसरी से तीसरी पर आश्रित होना प्रारम्भ कर देती है । अतः लालसा में अनुरक्त मन स्वार्थ वश सुख से कोसो दूर हो चला जाता है । मन में हमेशा दुविधा की स्थिति रहती है और मन की विजय करने को प्रबल भावना दूर्बल हो जाती है ।

वस्तुओं की प्राप्ति के लिए आजीवन संघर्ष मन को उचित मार्ग के अभाव में भटका देता है । जिस वस्तु की प्रबल इच्छा थी वह उचित समय पर मिल न सका । यौवन का समय था पर प्रेम का अनुभव न हो सका । मन की इच्छित कामनाएं समय पर न मिल कर बाद में मिले तो उसका औचित्य नहीं रह जाता है । समय पर वासना का पूरा होना ही सुख का कारण मान लिया जाता है । सहज रूप में माना जाता है कि मन के अनुकूल ही सुख और मन के प्रतिकूल ही दुख है । कवि दृष्टांत के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहते है कि शरद की पूर्णिमा रात्रि में चाँद नभ में उदित नहीं होने पर शरद की पूर्णिमा का सम्पूर्ण सौन्दर्य नष्ट हो जाता है । इसी दृष्टांत के माध्यम से कवि ने अपने जीवन के अनुभव को विर्णित किया है कि जीवन के स्वर्णिम बेला सुख-संपदा से वंचित रह गया । इसी वासना की छाया अर्थात् पकड़ उसे निरन्तर पीड़ा पहुचाता है । वसंत के सौंदर्य पूर्ण वातावरण में रंग भरी पुष्प पुष्पित न होकर, वसंत के बीत के बाद खिलने पर तो उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता है । वसंत का रस पूर्ण आनन्द वसंत में ले लेना सुखदायी है और यह भी बात सत्य है कि जिसने जीवन में पिछले वसंत से प्रेम किया था वहीं इस वसंत से फिर से प्रेम कर सकेगा ।

कवि अंत में स्थिर भाव से यह कहता है कि अतीत के अपूर्ण स्वप्नों के प्रति उनके मन में तनिक भी निराशा नहीं है। उनका का मानना है कि अतीत में मुझे जो कुछ प्राप्ति की इच्छा थी वह न मिली सका। फिर भी मुझे किसी प्रकार की वेदना और पीड़ा नहीं है। एक आशावादी मनुष्य की भाँति जीवन को देखते है। अभाव में जीना जीवन का नाम नहीं है। कवि अंत में उपदेश देते है कि अतीत से समस्त दुःखों को त्याग कर भविष्य के प्रति अपनी उर्जा को लागाना चाहिए। जीवन को साकारात्मक ढ़ग से जीना चाहिए। अतीत के छूना अर्थात् पुराने घाव को कुरेदना है। अतीत की प्रत्येक स्मृतियाँ सुख की अपेक्षाकृत दुख का कारण ज्यादा है। क्योंकि हम अतीत में पुनः लोट कर नहीं जा सकते। अतः जीवन में अतीत का कोई मूल्य नहीं है।

गिरिजाकुमार माथुर की कविताओं की शिल्प विधान अत्यन्त स्वाभाविक है। उन्होने सरल, सरस भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। छंद के पारम्परिक विधान को त्याग कर प्रचलित व्यावाहारिक भाषा को कविता में स्थान दिया है। भावात्मक और कलात्मक दृष्टि से उनके काव्य की रचना शिल्प में समानता पाई जाती है। कवि ने इस बात को स्वयं तारसप्तक की भूमिका में स्वीकर किया है कि- "विषय की मौलिकता के साथ-साथ कविता की तकनीक पर भी ध्यान देना जरूरी है। तारसप्तक की कविताओं में विषय से अधिक टेकनीक पर ध्यान दिया गया है। विषय की मौलिकता का पक्षपाती होत हुए भी मेरा विश्वास है कि टेकनीक के अभाव में कविता अधुरी रह जाती है।" [5]

5. उपसंहारः

कवि गिरिजाकुमार माथुर ने 'छाया मत छूना' कविता छायावादी विचार धारा से प्रभावित कविता है। प्रस्तुत कविता तारसप्तक के द्वितीय संस्करण से उद्धृत है। इसकी भाषा सरल और व्यावाहारिक खड़ी बोली में रचित है। कवि ने पूरी कविता में तत्सम, तद्भव और विदेशी शब्दों के प्रयोग द्वारा कविता में प्राण डालने का प्रयास किया है। कवि ने कविता में कठिन जीवन के यथार्थ को चित्रित किया है। कोई भी मनुष्य इस संसार से वर्तमान को छोड़ अतीत की ओर देखकर जीवन को नहीं जी सकता। जीवन में जो भी कुछ वह वर्तमान ही है। जीवन में पल-प्रतिपल कठोर सत्य का सामना करने लिए प्रस्तुत रहना चाहिए। जीवन को सुखमय बनाने का एक ही मंत्र है जो मिल रहा है उसे किसी भी प्रकार का विरोध किए बिना स्वीकार कर लेना चाहिए। अस्वीकार की स्थिति जीवन में दुःखद वातावरण को उत्पन्न करती है। स्वयं को सदैव श्रेष्ठ समझना और स्वंय को प्रभुत्वसंपंन बनाये रखने की प्रबल इच्छा हमारी तृष्णा की बढ़ाती है जिसे कवि ने मृगतृष्णा कहकर संबोधित किया है। यह मृगतृष्णा मनुष्यों की हालात रेगिस्थान के मृग की भाँति कर देती है। रेगिस्थान में सूर्य के प्रकाश से उत्पन्न होने वाली परावर्तन को ही लहराती हुई जल समझ लेती है। यह भ्रम उसे निरन्तर विचलित किए रखता। उसकी तृष्णा वास्तविक है परन्तु भ्रम जाल उसे उद्विग्न करती है। मनुष्यों को जीते सरमाया अर्थात् पूँजी की लालसा बनी रहती है। वास्तविक अर्थ में देखा जाए तो यही भरमाया की स्थिति है।

आलोच्य कविता यथार्थवाद और आशावाद पर प्रतिस्थित है। अतीत की सफलता और असफलता का वर्तमान में कोई महत्त्व नहीं रखता। सदैव आशावादी विचारधारा को अपना कर जीवन को गति प्रदान करते रहना चाहिए। अतीत का स्मरण जीवन को पीड़ा पहुँचाता है। जीवन में सांसारिक सुख को कभी भी वास्तविक सुख नहीं मानना चाहिए। धन आता जाता रहता है। कई बार ऐसा भी होता है कि जीवन में धन, यश, पद पाने के पश्चात् भी मनुष्य प्रसन्न नहीं है। तन से सुखी दिखने वाला व्यक्ति मन से सुखी नहीं होता है। इसीलिए जीवन को यथार्थ के धारातल

पर जीना चाहिए । वर्तमान में मनुष्य का जीवन देखने और दिखाने में ही फँसा हुआ है । इस प्रसंग में ओशो ने कहना था कि – "जिस चीज को दिखाना है उसे इस ढ़ग से छिपाना की तुम छिपा रहे हो । और देखना मनुष्य उसी ओर देखता रहेगा । मना कर दो कि इस दरवाजे से मत देखना, तुम देखोगे कि लोग उसी ओर छिप-छिप कर देखने लगा है ।"

उपर्युक्त कविता के सन्दर्भ में बुद्ध का एक अनुठा वचन है प्रासंगिक लगता है कि – "आकांक्षा बहुत सोच विचार से करना चाहिए । क्योंकि आकांक्षाएँ पूरी हो जाती है जिसे तुम चाहते हो आ ही जाता है देर या सबेर । आकांक्षा सोच समझ के करना अगर धन माँगा एक दिन आ ही जाएगा । पद माँगा एक दिन आ ही जाएगा । आदमी जो चाहता है उस तरफ धीरे-धीरे खींचता चला जाता है जिसकी आकांक्षा होती है । उसका प्रयास भी होने लगता है । जिसका प्रयास होने लगता है उसकी प्राप्ति भी होने लगती है । सोच के माँगना जो माँगा वह मिल जाता है । विचार के माँगना नहीं तो पछताओगे । नहीं तो रोओगे । क्योंकि इतने दिन माँगन में लगा दिया । इतने दिन जिसे माँगे उसे इक्कट्ठा करने में गये और कुछ भी न मिला । कुछ और माँग लिया होता । जीवन भर प्रमाद में लगे रहे । जिसे तुम जिन्दगी कहते हो एक गहरी नींद है जिसमें तुम करते बहुत हो पर कुछ होता नहीं । चलते बहुत हो पर पहुँचते कहीं भी नहीं । जिसमे तुम सिर्फ मरते हो जीते नहीं । काम रहित गुण-गान करो । मत गुण-गान करो वासना का । क्योंकि जितना तुम गुण-गान करते हो अपने ही गुण-गान से प्रभावित होते चले जाते हो ।"

सन्दर्भ सूचीः

1. भीतरी नदी का यात्रा (काव्य संग्रह की भूमिका से) – गिरिजाकुमार माथुर ।
2. छाया मत छूना (कविता) - *तारसप्तक* (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ- 177 .
3. वहीं, पृष्ठ- 177 .
4. वहीं, पृष्ठ- 177 .
5. तारसप्तक (द्वितीय संस्करण) : स. अज्ञेय, पृष्ठ- 123.

सहायक ग्रंथ सूचीः

1. अज्ञेय. *तारसप्तक* (प्रथम खंड - द्वितीय संस्करण), दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ, 1963 ई.
2. जैन, प्रो. सुमन. *छायावादोत्तर हिन्दी कविता*, प्रयागराजः लोकभारती प्रकाशन, 2021 ई.
3. मिश्र, डॉ. दुर्गाशंकर. *गिरिजाकुमार माथुर और उनका काव्य*, लखनऊ : हिन्दी साहित्य भंडार, 55 चौपटियाँ रोड, 1974 ई.
4. सक्सेना, डॉ. द्वारिका प्रसाद. *हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि*, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर, 2020 ई.
5. त्रिखा, डॉ. चन्द्र. *प्रतिनिधि आधुनिक कवि*, पंचकुलाः हरियाणा साहित्य अकादमी, 2003 ई.